अन्तरा-शब्दशक्ति

नैनु का टीवी

(बाल कहानी संग्रह)

डॉ. वर्षा चौबे

नैनु का टीवी

(बाल कहानी संग्रह)

डॉ. वर्षा चौबे

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-5372-009-4

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९ - डा वर्षा चौबे
मूल्य -६०.०० रुपये
रेखाचित्रकार- जयति सुराना, वारासिवनी
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Nainu Ka TV by Dr. Varsha Choubey

वैधानिक चेतावनी- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

अत्यंत विनम्र,मृदुभाषी, मिलनसार स्वभाव की डॉ. वर्षा चौबे भोपाल नगर में आयोजित होने वाली विभिन्न काव्य गोष्ठी में निरंतर अपनी ओजस्वी उपस्थिति दर्ज कराती हैं।वे शासकीय सेवा में शिक्षक के पद पर कार्य करते हुए पिछले दस वर्षो से अपनी शाला का कुशलतापूर्वक संचालन कर रहीं हैं।

निरन्तर अपने नवाचारों का प्रयोग करते हुए जहाँ उन्होंने शिक्षण कार्य को रुचिकर बनाया है, वहीं 'राज्य शिक्षा केंद्र' के साथ जुड़कर पाठ्यपुस्तक निर्माण, मॉड्यूल निर्माण,एवं बोर्ड के प्रश्न पत्रों को बनाने में भी उनकी अहम भूमिका रहती है।

बच्चों के साथ आपका जुड़ाव तो देखते ही बनता है। बच्चों से जुड़े रहने से वर्षा ने बाल साहित्य के क्षेत्र में जो बाल कविताएं लिखी है उन्हें उनकी पुस्तक 'बाल वैभव' में पढ़ा जा सकता है।और अब उनकी छोटी -छोटी शिक्षाप्रद बाल कहानियों का संग्रह 'नैनु का टीवी' शीर्षक से बाल पाठकों के बीच होगा।

भारतीय भाषाओं में बच्चों को कहानियाँ पढ़ना,सुनना अच्छा लगता है। दादी-नानी जब कोई कहानी सुनाती है तो बच्चों का मन उन्हें सुनने में रम जाता है।

डॉ. वर्षा के 'नैनु का टीवी' कहानी संग्रह की ग्यारह कहानियों में शाला रोज आने व अनुशासन की सीख है।लेकिन 'भोलू की पार्टी' में ऑनलाइन पार्टी का सामान बुक करना व आनलाइन पेमेंट करना आधुनिक बच्चों की सोच को दर्शाता है। वही 'शिवा' कहानी में एनजीओ द्वारा गरीब शिवा की पढ़ाई का जिम्मा लेना बेहद अच्छी कहानी है,जो नए कथानक पर होने से सराहनीय है।

'पत्रों का संसार' कहानी में मोबाइल,ईमेल आदि का उपयोग व उसकी सुविधाएं भी बताई गई है,किंतु पत्र लिखने का जो मजा है उसे इस कहानी में दर्शाकर बच्चों को पत्र लेखन विधा के लिए प्रेरित कर पत्र विधा की ओर आकर्षित करने का अनुपम प्रयासकिया गया है। 'अनमोल उपहार' कहानी में दादा जी के जन्मदिन पर बच्चों द्वारा दादा जी को उपहार स्वरूप पौधा देना बच्चों की नई सोच,पर्यावरण की चिंता व निदान दर्शाने का प्रयास है।

छोटी कक्षाओं के बच्चों के पाठ्यक्रम में ऐसी कहानियाँ रखी जा सकती हैं।

'पहल' कहानी स्वच्छता का महत्व,स्वस्थ रहने के तरीकों व आपसी सहयोग का अच्छा उदाहरण है।

इस संग्रह की अन्य कहानियाँ भी रोचक एवं शिक्षाप्रद है। संग्रह की शीर्षक कहानी जहाँ एक और बच्चों के खेलने की प्रवृत्ति को महत्व देती है, वहीं आजकल ज्यादा कर जो बच्चे टीवी देखते रहते हैं उन्हें भी उन्हें भी समय का आभास दिलाती हुई प्रतीत होती है।

'नैनु टीवी' संग्रह की बाल कहानियाँ सरल भाषा में लिखी गई हैं। आकार में भी यह कहानियाँ छोटी-छोटी होने से जल्दी ही पढ़ी व सुनी जा सकती हैं।

मैं निश्चित ही यह कह सकता हूँ कि इस संग्रह की प्रत्येक कहानी बच्चों को पसंद आएगी।

मैं आशा करता हूँ कि डॉ. वर्षा ऐसे ही समसामयिक, सकारात्मक सोच एवं विषय की बाल कहानियाँ लिखने का सिलसिला अनवरत जारी रखेंगी।

असीम स्नेह और आशीर्वाद के साथ

महेश सक्सेना
सचिव/निदेशक
बाल कल्याण एवं बालसाहित्य शोध केन्द्र, भोपाल

अपनी बात

ईश्वर की असीम अनुकंपा एवं अपने बड़ों के आशीर्वाद और सहयोगियों की शुभकामनाओं के फलस्वरुप में अपनी तीसरी किताब लेकिन बाल साहित्य पर दूसरी, कहानी संग्रह 'नैनु का टीवी' आप सभी के बीच रखने जा रही हूँ।

बच्चों के लिए लिखना याने बच्चा बनना, बहुत मुश्किल है ।निश्छल मन, छोटी-छोटी बातों से बदलती उनकी दुनिया और थोड़े से स्नेह पर अपना सब कुछ वार देना बाल सुलभ प्रवृत्तिहोती है।

एक शिक्षक होने के नाते बच्चों से मेरा गहरा व स्नेह युक्त संबंध है। अतः उनके मनोभावों को समझते हुए उन्हीं की भाषा में, उन्हीं के लिए यह मेरा एक और छोटा- सा प्रयास है।

आशा है ये कहानी संग्रह बच्चों को अवश्य पसंद आएगा एवं आप सभी का स्नेहाशीष मुझे पुनः प्राप्त होगा।

वर्षा

अनुक्रमणिका

1.अनुशासन	7
2.झीनी का गाँव	9
3.दीदी	12
4.शिवा	14
5.अनमोल उपहार	17
6.भोलू की पार्टी	19
7.पहल	21
8.बिन्नी की दुनिया	24
9.नैनु का टीवी	26
10.आलसी शिवानी	29
11.पत्र का संसार	31

अनुशासन

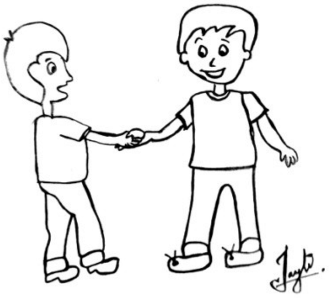

यशु के स्कूल में दो-तीन दिन की छुट्टियां थी। दिन भर घर में टीवी देखता नहीं तो बोर होता।

शोभा ने सोचा चलो आज अपनी सहेली गौतमी के यहाँ हो आते हैं, और उसका बेटा भी यशु के बराबर है तो दोनों मिलकर खेल भी लेंगे, और कई महीनों से से सहेली से मिली भी नहीं तो मुलाकात भी हो जाएगी।

घर के काम निपटाने के बाद है वह यशु के साथ अपनी सहेली के घर पहुँची। दरवाजा खटखटाया तो गौतमी ने ही दरवाजा खोला वह अपनी सहेली शोभा को देखकर खुश हो गई "अरे! वाह शोभा, बड़े दिनों बाद आई।" कहते हुए उसने गौतमी ने उसे गले से लगा लिया। "और यह यशु कितना बड़ा हो गया है...।" "नमस्ते आंटी" यशु ने गौतमी को नमस्ते किया।

"नमस्ते बेटा, बैठो मैं पहले तुम लोगों के लिए पानी लेकर आती हूँ।" उन्हें ड्राइंग रूम में बैठाकर वह अंदर पानी लेने चली गई।

तभी गौतमी के सुंदर ड्राइंग रूम में फिश एक्यूरियम और भी कई सुंदर, कीमती चीजों को देखकर यशु उन्हें पास से देखने लगा।

रंग-बिरंगी मछलियों को देखकर उन्हें छूने के लिए हाथ बढ़ा रहा था कि उसे जोर का धक्का लगा और वह फर्श पर गिर पड़ा और उसका सिर सोफे से टकराते-टकराते बचा।

`तभी गौतमी वहाँ पानी लेकर आई वह और शोभा दोनों विभोर की इस हरकत से हैरान हुई गौतमी ने विभोर और को डांटते हुए "कहा यह क्या बदतमीजी है विभु...? किसी को इस तरह धक्का देते हैं क्या, उसे लग जाती तो ...।"

माँ की डांट सुनकर विभोर थोड़ा सहम गया "वो, वो, वो,..

"और यह बताओ तुमने उसे धक्का क्यों दिया....?"

"माँ वह एक्यूरियम की मछलियां छू रहा था। और ऐसे में फिश एक्यूरियम गिर जाता, टूट जाता तो.... फिर आप ही कहती है न कि किसी के

घर जाकर उसकी बिना अनुमति के कोई चीज नहीं छूना चाहिए।" विभोर ने सहजता से कहा।

"हाँ बेटा, यह सही है लेकिन इस तरह किसी को धक्का देना भी ठीक नहीं है। देखो यह हमसे मिलने हमारे घर आया है,चलो उसे सॉरी बोलो।'

अब विभोर को लगा कि उसे कुछ गलती हो गई। और उसने यशु से कहा "सॉरी दोस्त, मुझसे गलती हो गई अब मैं ऐसा नहीं करूंगा।" कहते हुए उसने कान पकड़ लिए।

यशु कुछ चुप-सा था। उसकी माँ ने उसे समझाया "बेटा उससे गलती हुई है और उसने तुमसे माफी माँग ली है, जाओ उसे माफ कर दो और दोनों साथ में खेलो।"

यशु ने विभोर से हाथ मिलाया तभी विभु ने कहा "तुम ठहरो, मैं आता हूँ।"

कहकर वह अंदर गया और अपने क्रिकेट का सामान लेकर आया और बोला "चलो बाहर आँगन में चलकर कर क्रिकेट खेलते हैं।" बैट बॉल लेकर यशु खुश हो गया। दोनों बहुत देर तक बाहर खेलते रहे।

फिर गौतमी ने उन्हें बुलाया कि भई दोनों अंदर आ जाओ, कुछ खा पी लो।

दोनों ने साथ में नाश्ता किया, टीवी देखी, थोड़ी देर कैरम खेलने के बाद यशु को उसकी माँ ने आवाज दी कि "चलो बेटा, अब घर चलते हैं।"

जब वे चलने लगे तो विभु ने शोभा आंटी को नमस्ते किया और यशु को पुनः सॉरी कहा तो यशु बोला "कोई बात नहीं मैं इस बात को भूल गया हूँ और हाँ अब तुम भी मेरे घर आना हम दोनों मिलकर खेलेंगे। कहकर उसने गौतमी आंटी को नमस्कार किया।

और वह खुशी-खुशी अपने घर लौट कर आ गया।

झीनी का गाँव

अपने गाँव जाने की बात जब से झीनी ने सुनी थी वह तब से बहुत खुश थी।

दरअसल उसे पता नहीं था कि गाँव क्या होता है। उसे तो मालूम था कि उसके दादा-दादी ,बड़े दादा-दादी और कुछ लोग गाँव में रहते हैं, जो उससे बहुत प्यार करते हैं।

वह जब बहुत छोटी थी तब गई थी,ऐसा माँ पिताजी बताते हैं। लेकिन उसे कुछ भी याद नहीं। रास्ते भर गाँव की कल्पना करती माँ- पिताजी से प्रश्न करती झीनी जैसे ही रेलवे स्टेशन पर उतरी तो एक व्यक्ति जो स्टेशन पर उनकी ही प्रतीक्षा कर रहे थे,उन्होंनें उसके माँ-पिता जी के पैर छूते हुए कहा "प्रणाम भैया भाभी।"

"खुश रहो,खुश रहो और कब आए तुम यहाँ..?

"बस अभी थोड़ी देर पहले ही आया....।" कहते हुए वह झीनी की ओर बढ़े "अच्छा तो यह है हमारी बिटिया रानी।" और कह कर झीनी को गोद में उठाने लगे। अनजाने व्यक्ति को देख कर झीनी माँ के पीछे छुप गई।

उसने अपनी माँ से पूछा "कौन हैं ये..?"

उन्होंने बताया "गाँव में जो तुम्हारे बड़े दादाजी हैं न,ये उनके बेटे हैं। तुम्हारे चाचाजी, यह हमें लेने आए हैं।

"तो क्या हम गाँव आ गए..?" झीनी ने उत्सुकता से पूछा।

"नहीं, अभी हमें तीस किलोमीटर दूर अंदर जाना है।"

"तो हम ट्रेन से उतर क्यों गए ..?"

"बेटा,ये ट्रेन वहाँ तक नहीं जाती है, इसलिए अब इधर से हम चाचा जी की गाड़ी में जाएंगे।" माँ ने समझाया।

जब तक झीनी अपनी माँ से बात कर रही थी तब तक उसके पिताजी और चाचा जी ने सामान डिक्की में रखा और आवाज दी "आओ बेटा चले.."

झीनी अपनी माँ के साथ आकर गाड़ी में बैठ गई। थोड़ी दूर पक्की सड़क के बाद गाड़ी कुछ कच्चे रास्ते से धूल उड़ाती हुई गुजरने लगी।माँ ने काँच तो बंद कर दिए, लेकिन झीनी तो काँच के बाहर उत्सुकता पूर्वक देख रही थी।

हरे-भरे खेत ही खेत दिखाई रहे थे। फिर आगे चलकर कुछ मकान दिखाई दिए। लेकिन शहरों जैसी भीड़भाड़, दुकानें और शोर-शराबा यहाँ कहीं नहीं था।

शाम होते-होते वे गाँव वाले घर पहुंच गए। वहाँ सभी एक-दूसरे के पैर छूकर बड़े प्रेम से मिल रहे थे।झीनी कुछ सकुचाई-सी डोलती रही।

रात हुई तो खाना खाकर सभी सो गए। जब वह सुबह उठी तो देखा माँ दादी और अन्य लोगों के साथ रसोई में व्यस्त है।

बहुत बड़ा मकान था वह भी खाना खाकर डोलते- डोलते पूरा मकान देखने लगी।यह क्या! कितने बड़े-बड़े पेड़ घर पर ही लगे हैं। वह आश्चर्यचकित होकर घूम रही थी। घूमते-घूमते पीछे आंगन की तरफ पेड़ों के नीचे जाकर बैठ गई। वहाँ चबूतरा भी था। ठंडी- ठंडी हवा में झीनी को नींद गई। यहाँ उसकी दादी और मम्मी उसे ढूंढते-ढूंढते परेशान हो रही थी।

तभी किसी ने पेड़ के नीचे सोते देखा तो बताया कि "अरे! झीनी तो यहाँ सो रही है।"

झीनी जब तक तक गाँव में रही गांव रोज पिता के साथ खेत जाती वहाँ से चने, मटर तोड़ कर लाती। गायों को चारा देना, उनका दूध लगते देखना, चूल्हे पर रोटी बनते देखना, बड़े-बड़े घर के आंगन और सबका एक

साथ हिल मिलकर रहना साथ खाना खाना देखकर उसे बहुत अच्छा लग रहा था। कुछ ही दिनों में पूरे घर की लाड़ली हो गई थी वह।

जब एक हफ्ते बाद जब वापस जाने का मौका आया तो वह बहुत उदास हो गई।

यहाँ इतने लोगों के बीच रहना, दादा-दादी से किससे-कहानी सुनना। दौड़-दौड़ कर खेलना उस छोटे-से घर में कहाँ संभव था। और स्कूल से आने के बाद तो दिन भर घर में अकेली ही रहती। मम्मी- पापा तो शाम तक ही ऑफिस से लौटते।

गाड़ी में बैठते हुए उसकी आंखों से आँसू आ गए। उसकी दादी ने उसके प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए का "रो मत बेटा, हमें भी तुम्हारी याद बहुत आएगी।पर जैसे ही तुम्हारी परीक्षा खत्म होगी और छुट्टियाँ लगेगीं हम तुम्हें यहाँ फिर बुला लेंगे।" सुनकर झीनी को अच्छा लगा। और वह गाड़ी में बैठ गई। कार में से दादा- दादी को हाथ हिलाते-हिलाते गाड़ी आगे बढ़ गई। लेकिन झीनी जब तक गांव के बाहर नहीं निकली गई तब तक वह अपने हाथ हिलाती रही। मानो पूरे गाँव को बाय कर रही हो।

दीदी

एक बड़े से बरगद के पेड़ के नीचे रधिया बैठी थी, तभी थोड़ी देर में

कालू, राजी, देवी,ऑसिफ, संगीता और भी गांव के कुछ बच्चे आए और रधिया को घेर कर बैठ गए।बच्चे बोले "दीदी आज आप हमें कौन-सी कहानी सुनाओगी?"

"आज मैं तुम्हें परी की कहानी सुनाऊंगी।"

"वाऊ! सब बच्चे खुश हो एक साथ चिल्लाए।

रधिया ने सभी बच्चों को परी की कहानी सुनाई और कहा "अच्छा तुम सब लोग अब घर जाओ, कल सुबह सबको स्कूल जाना है।"

"हाँ दीदी, पर यह गोलू और आसिफ है ना यह लोग रोज स्कूल नहीं जाते।" देवी ने कहा

"गलत बात," रधिया ने कहा हम सबको रोज स्कूल जाना चाहिए और हमारे आसपास जो बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं उन्हें भी स्कूल जाने के लिए बोलना चाहिए।"

"दीदी, रवि बोलता है कि क्या होगा स्कूल जाकर..?"

"अरे! कैसी बात करते हो

भई, हम स्कूल जाकर पढ़ना-लिखने के साथ-साथ अच्छी-अच्छी बातें जानने को मिलेगी और पढ़- लिख कर नौकरी करेंगे, देश की सेवा करेंगे, स्कूल में मित्रों का सहयोग शाला में ही तो सीखेंगे। और भी बहुत सारी बातें सीखने को मिलती हैं।"

"अच्छा दीदी फिर हम सभी लोग शाला जाएंगे, पर दीदी मेरी नींद जल्दी नहीं खुलती है।"आसिफ ने मासूमियत से कहा।

"तुम रात में जल्दी सोया करो तो सुबह जल्दी उठ जाओगे,कोशिश तो करनी ही पड़ेगी।"

"पर दीदी....

"कोई पर नहीं अब यदि तुम स्कूल नहीं जाओगे तो मैं तुम्हें कहानी भी नहीं सुनाऊंगी और मैं तुमसे गुस्सा भी हो जाऊंगी।" रधिया ने बनावटी गुस्से से कहा।

"नहीं दीदी, आप हमसे गुस्सा नहीं होना। हम कल से रोज स्कूल जाएंगे गोलू और आसिफ ने एक स्वर में कहा।"

"ठीक है, अगले हफ्ते हम सभी फिर यही मिलेंगे तब तक सभी बच्चों को ढेर सारा प्यार।"

"नमस्ते दीदी कहकर सभी बच्चे खुशी-खुशी अपने घर चल दिए।

शिवा

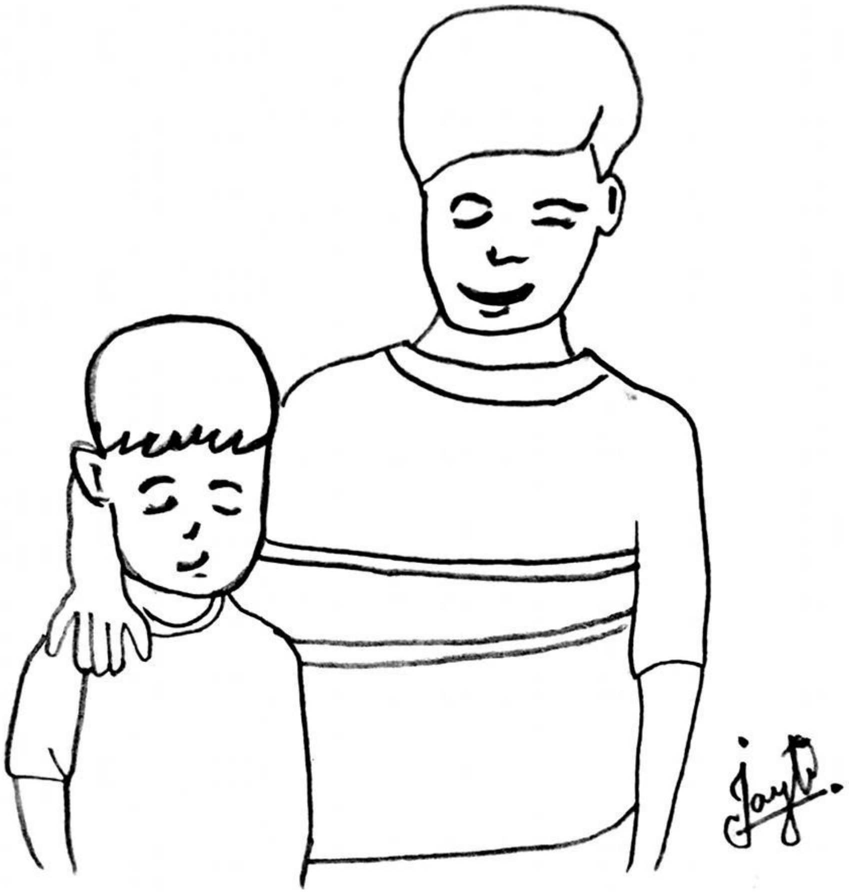

आदित्य जब से बाजार से लौटकर आया तभी से अनमना-सा था।

"क्या बात है बेटा मैं शाम से देख रही हूँ तुम कुछ खोए-खोए से हो, तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न?" नेहा ने सिर पर हाथ फेरते हुए पूछा।

"हाँ माँ" आदित्य ने उदास स्वर में कहा।

"तो फिर क्या सोच रहे हो बेटा,बताओ मुझे।"

"माँ मैं उस बच्चे के बारे में सोच रहा था जो लालबत्ती पर हमको पेपर बेचते मिला था।"

"हाँ तो...!

"तो उसने बताया था न आपको कि वह घर की जिम्मेदारी की वजह से स्कूल नहीं जाता, न ग्राउंड में दोस्तों के साथ खेल पाता। माँ ऐसा क्यों होता है...?"

"हाँ बेटा हमारे यहाँ कुछ लोगों के परिवार में कमाने वाला कोई नहीं होता इसलिए बच्चों को काम करने के लिए बाहर निकलना पड़ता है।"

"माँ क्या हम इन बच्चों के लिए कुछ नहीं कर सकते।" आदित्य ने चिंतित स्वर में पूछा।

"बेटा ऐसे तो हजारों बच्चे हैं हम किस-किस के लिए क्या- क्या करेंगे।"

"माँ आप मुझे उससे कल फिर से मिलाने ले जा सकती हो,..? आदित्य ने कुछ सोचते हुए कहा।

"क्यों..?"

'मैं सोच रहा हूँ मैं अपनी ड्राइंग बुक, कलर पेंसिल और भी कुछ उसे दे आऊँ।" आदित्य ने भावुक होते हुए कहा ।

"ठीक है बेटा कल चलेंगे अभी तुम सो जाओ। अगली सुबह कुछ खिलौने पेंटिंग का सामान आदि के साथ नेहा अपने बेटे आदित्य को लेकर उसी चौराहे पर पहुंची जहाँ शिवा मिला था।रोज की तरह वह आज भी पेपर बेच रहा था लाल बत्ती होते ही आदित्य की गाड़ी रुकी और शिवा दौड़कर गाड़ी के पास आ गया नेहा ने कांच खोल कर कहा "बेटे थोड़े किनारे पर आओ हमें तुमसे कुछ काम है।" और गाड़ी साइड में लगा दी। शिवा दौड़कर गाड़ी के पास आया आदित्य ने उससे पूछा "तुम्हारा नाम क्या है?"

उसने कहा "शिवा"।

"तुम स्कूल जाते हो...?"

"हाँ, मैं सुबह स्कूल जाता हूं और शाम को पेपर बेचता हूँ।'"

"ओह! आदित्य ने कहा फिर शिवा से कहा "क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे..?" उसकी बात सुनकर शिवा आश्चर्य से बोला "मैं तुम्हारा दोस्त....."

"क्यों क्या तुम मेरे दोस्त नहीं बन सकते।"

शिवा बोला "नहीं-नहीं ऐसी बात नहीं है मुझे तुम्हारा दोस्त बन कर बहुत खुशी होगी।"

"लेकिन......"

उसने कहा "लेकिन वेकिन कुछ नहीं अब से जब भी मैं यहाँ से निकलूंगा तुमसे जरुर मिलने आऊंगा और देखो मैं तुम्हारे लिए कुछ उपहार लेकर आया हूँ।" यह कहकर आदित्य ने उसके लिए लाए सामान को गाड़ी से निकाला और उसे देने लगा शिवा ने कहा "अरे! नहीं, नहीं मैं तुमसे यह सामान नहीं ले सकता तुमने तो मुझसे पेपर खरीदा ही नहीं।'

"अरे यह तो मैं एक दोस्त की हैसियत से दे रहा हूँ प्लीज रख लो।" शिवा ने सामान को खुशी-खुशी रख लिया और कुछ पेपर उसे उपहार में दिए। आदित्य ने उन पेपर को लेकर गाड़ी में रख दिया। आज वह बहुत खुश था उसने शिवा को बाय-बाय किया और गाड़ी में आकर बैठ गया। कुछ दिनों बाद आदित्य अपनी माँ के साथ फिर उसी रास्ते से गुजर रहा था परंतु आज उसे शिवा दिखाई नहीं दिया पूछने पर आसपास वालों ने बताया की एक एनजीओ वाले आए थे। उन्होंने शिवा को गोद ले लिया और अब पढ़ाई का जिम्मा उन्ही का है और वह उसके घर की भी कुछ मदद कर जिससे शिवा को काम नहीं करना पड़ेगा। यह सुनकर आदित्य के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई।वह शिवा के लिए खुश था।

अनमोल उपहार

दीपू के पड़ोसी दोस्त लकी और आकाश दीपू को खेलने के लिए बुलाने उसके घर गए। दीपू कमरे में बैठा ड्राइंग कर रहा था। अरे!दीपू आज तुम आए नहीं खेलने, चल न खेलने। और तू यह क्या कर रहा है?" दोनों ने एक साथ पूछा।

दीपू बोला "नहीं नहीं,मैं नहीं आ रहा। कल मेरे दादा जी का जन्मदिन है तो मैं उनके लिए ग्रीटिंग बना रहा हूँ। मैं उन्हें यह सुबह-सुबह दूंगा।

"वाऊ! जन्मदिन वह भी दादा जी का तब तो बड़ा मजा आएगा, कल पार्टी भी होगी।" लकी चहकता हुआ बोला। दअरसल लकी और आकाश के दादाजी उसके साथ नहीं रहते। तो वे दोनों अक्सर दीपू के दादा जी के पास आते उनके साथ खेला करते, कहानियाँ सुनते। दादाजी भी उन्हें बहुत स्नेह करते थे।

"अरे! नहीं दादा जी को यह पसंद नहीं है। पर हाँ कल घर में सुबह छोटी-सी पूजा है, दीदी और मैंने प्लान किया है कि पूजा के बाद चुपचाप केक लेकर आएंगे और फिर दादाजी से के काटने को कहेंगे।"

"तब तो बड़ा मजा आएगा हम दोनों भी आएँगे।"

"हाँ, हाँ जरूर आना ।मैं तुम लोगों को बतानेआने ही वाला था।"

"ठीक है तुम अपना काम करो,हम लोग चलते हैं कल मिलेंगे।"

"अच्छा सुनो तुम दोनों करीब ग्यारह बजे तक जरूर आ जाना।"

"ठीक है...।" कहकर दोनों खुशी-खुशी घर को लौट आए।

अगली सुबह ठीक ग्यारह बजे दोनों केक कटने के पहले दीपू के घर पहुंच गए। "जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ दादा जी" कहते हुए घर के अंदर

घुसे उनके हाथों एक-एक पौधा था। जिन्हें उन्होंने दादा जी को दिया। फिर उनके पर उनके पैर छुए।"

दादाजी ने पौधे लेते हुए आशीर्वाद दिया और पूछा "तुम लोग यह क्यों लाए हो?"

"दादा जी आप हमसे वैसे तो कुछ लेते नहीं और आपको पेड़-पौधे बहुत प्रिय हैं,इसलिए हमने सोचा हम आपके जन्मदिन पर आपके लिए यह पौधे ले चलते हैं।"

"वाह बेटा, यह तो सबसे अनमोल उपहार है। हम इन्हें पहले बगीचे में लगाएंगे फिर केक काटेंगे।"

दादा जी के साथ तीनों बच्चे,उनकी दादी, व दीपू के माता-पिता सभी ने मिलकर उन पौधों को बगीचे में लगाया। फिर सबने मिलकर केक काटा। बच्चों के साथ आज दादाजी भी बहुत खुश नजर आ रहे थे। तभी दादा जी ने कहा "बच्चों, आज मैंने तुम्हारी सभी बात मानी, केक भी काटा। अब तुम लोगों को भी मेरी एक बात माननी पड़ेगी।"

"जी दादा जी कहिए,हम आपकी बात मानने को तैयार हैं। उन्होंने एक साथ उत्तर दिया।

दादा जी ने कहा "आप सभी संकल्प करो कि हर वर्ष अपने-अपने जन्मदिन पर एक पौधा अवश्य लगाएंगे।"

"आप बिल्कुल सही कह रहे हैं दादा जी, हम सभी अपने जन्मदिन पर एक पौधा अवश्य लगाएंगे और अपने दोस्तों से भी लगाने को कहेंगे।"

"शाबाश बच्चों, अब तुम लोग खेलो मैं चलता हूँ आराम करने। "कहकर दादाजी अंदर चले गए और बच्चे के खाने में मशरूफ हो गए।

भोलू की पार्टी

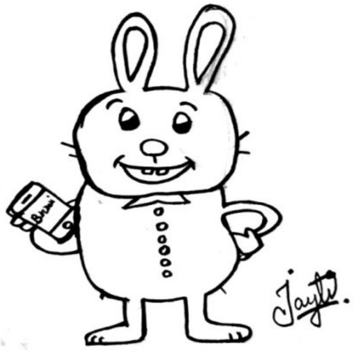

"अभी चार-पांच दिन पहले ही तो भोलू खरगोश शहर से लौटा और आज यह पार्टी,गजब! इतनी जल्दी इंतजाम कैसे किया होगा "डिंकी लोमड़ी ने शक जाहिर करते हुए कोनी बंदर से कहा ।

"हाँ!आश्चर्य तो मुझे भी हो रहा है,पर चलो शाम को चल कर देखते हैं तभी पूछेंगे।"

वाह! इतनी सुंदर सजावट और खाने का इतना सामान देखकर सभी खुश हो रहे थे और भोलू को पार्टी के लिए बधाई भी दे रहे थे।

"क्या बात है भोलू भाई.... ये पार्टी क्यों ...?"दूसरे खरगोश गोलू ने पूछा।

"अरे बहुत दिन बाद अपने घर लौटा तो मैंने सोचा तुम सभी से मिले हुए काफी समय हो गया और मुझे जल्दी लौटना भी है ऐसे में एक-एक से मिलना नहीं हो पाएगा तो क्यों नहीं सब को घर पर ही बुला लिया जाए।"

"वाह! मजेदार आईडिया" गोलू ने गाजर को चबाते हुए कहा।

"लेकिन यार यह तो बता तूने जल्दी सारा इंतजाम कैसे किया?" सभी दोस्तों ने चहकते हुए पूछा।

"अरे यार तुम लोग भी बस अपनी-अपनी दुनिया में रहते हो, बाहर जाकर देखो क्या जमाना आ गया है।"

"हूँ, हूँ वो कैसे? हिरण उछलता हुआ बोला।

"देखो जैसे ही मेरे मन में पार्टी का विचार आया मैंने फटाफट एक मीनू तैयार किया और ऑनलाइन बुक करा दिया आर्डर।"

"ऑनलाइन बुकिंग! यह क्या होता है?" दीनू ऊँट ने आंखे फाड़ते हुए पूछा।

"मैं तुम सबको बताता हूं, कहते हुए भोलू दौड़कर अंदर गया और एक बड़ा-सा मोबाइल लेकर आया और बताने लगा" यह मोबाइल है, इसमें मैंने जो-जो सामान मुझे चाहिए था उसका नाम टाइप किया और उस दुकान आर्डर भेज दिया, समय और जगह भी बताई कहाँ सामान लाना है और थोड़ी देर में वह सब सामान लेकर आ गया।"

"अरे वाह! सभी खुशी से बोल पड़े।

"और एक बात मुझे पैसे भी नकद नहीं देने पड़े.."

"तो क्या फ्री में आया...."

"अरे नहीं, जितने का सामान था उतने पैसे मेरे अकाउंट से अपने आप ही कट गए।"

"वो कैसे! आश्चर्य से डिंकी बन्दर ने पूछा।

"अरे भाई इतनी जल्दी सब समझ में नहीं आएगा, अभी सब पार्टी उड़ाओ मौज करो कल दोपहर में हम मिलेंगे उसी पेड़ के नीचे फिर मैं सब समझाऊँगा।"

"ठीक है, ठीक है हम सब आएंगे।" कहकर सब नाचने कूदने लगे।

पहल

पढ़ते और खेलते भी। कॉलोनी में बने जनता क्वार्टर में दोनों अगल-बगल ही रहते थे। इन दिनों दोनों के स्कूल की छुट्टियाँ लगी हुईं थी। दिन में तो दोनों टीवी देखते, शाम होते ही गली में खेलते। एक दिन अनुज बोला "यार शिवम इस गली में क्रिकेट खेलने का मजा नहीं आता।"

"हाँ यार कहता तो तू सही है, पर क्या करें..जगह भी तो नहीं हैं ।"

"मैं सोच रहा हूं कि हमारी कालोनी के कोने में जो जगह है जो न हम क्यों न हम उसे खेल का मैदान बना लें।"

"हाँ यार, आईडिया तो अच्छा है, पर वहाँ कितने कचरे का ढेर लगा है और कितना कबाड़ा भी है।"

"कोई बात नहीं हम उसे साफ करेंगे।"

"अरे इतना कचरा हम कैसे साफ कर पाएंगे..?" शिवम ने चिंतित होते हुए कहा।

"अब देखो किसी भी काम का श्री गणेश करने के लिए मन तो बनाना पड़ेगा और हिम्मत से काम लेना होगा, केवल सोचने से कुछ नहीं होगा।"

"अच्छा तो क्या करें..?"

"चलो पहले सभी दोस्तों को बुला कर लाते हैं।"

थोड़ी देर में रोहित, सोना,कुणाल, गुड्डी, बबलू ,महेश, दीपू सभी आ जाते हैं। अनुज ने अपने दोस्तों से पूछा "देखो भाई इस मैदान में क्रिकेट कौन-कौन खेलना चाहता है..?"

"इस कचरे के ढेर में कौन खेलना चाहेगा?" मुँह बनाते हुए कुणाल ने कहा।

"और यदि ये कचरा यहाँ से हटा दिया जाए तो।"

"अरे! इतना कचरा कैसे हटेगा..?" दीपू ने आश्चर्य चकित होकर पूछा।

"हम सभी थोड़ी-थोड़ी यहाँ पर मेहनत करेंगे, हमें देख कर निश्चित ही बड़े लोग भी हमारी सहायता करेंगे।और हम सब घर जाकर अपने मम्मी-पापा से भी इस बारे में बात करेंगे। वह भी हमारी कुछ मदद अवश्य करेंगे।"

"हाँ, हाँ मेरी मम्मी कहती हैं, यदि कचरा अधिक हो तो नगर निगम वालों को बुलाना चाहिए।" बबली ने बड़ी सयानी बनते हुए कहा।

"चलो ठीक है हम कल से कोशिश करेंगे।" घर जाकर सभी बच्चों ने अपने मम्मी पापा को इस विषय में बताया ।पहले तो सभी नाराज हुए। लेकिन जब मैदान में सभी बच्चे इकट्ठे हुए और बच्चों ने थोड़ा सफाई का काम शुरू किया तो सबसे पहले दीपू के पापा ने नगर निगम वालों को फोन लगाया।

थोड़ी ही देर में वहाँ नगर निगम वालों की गाड़ी आई और कचरा भर कर ले गई ।

इसके बाद सभी ने मिलकर उस मैदान को साफ किया। और सब ने यह प्रण किया कि इस मैदान में बच्चों के खेलने के लिए जगह सुरक्षित रखी जाएगी। कोई भी अपना कचरा लाकर यहाँ मैदान में नहीं फेंकेगा। सभी अपना-अपना कचरा रोज कचरा लेने आने वाली गाड़ी को देंगे। अनुज और उसके दोस्तों के प्रयास से सभी बहुत खुश थे। अब सभी बच्चे शाम को आराम से उस खुले मैदान में क्रिकेट खेलते।

बिन्नी की दुनिया

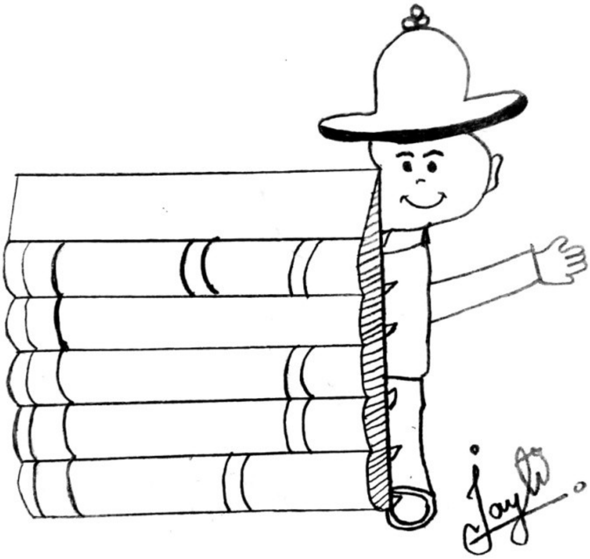

"बिन्नी,बन्नी. ..'स्मृ ति बिन्नी को आवा ज लगाते हुई बरामदे तक आई देखा तो बिन्नी उर्फ विभोर वहाँ स्टूल पे खड़े होकर लाफ्ट पर कुछ कर रहा था। दस वर्षीय बिन्नी बहुत शरारती था। परीक्षा के दिनों में उसे पढ़ाने में स्मृति को नानी याद आ जाती।कभी-कभी जब खीज जाती तो उसे एकाध लगा भी देती। थोड़ी देर तो बिन्नी शांत रहता फिर शुरू दूसरी खुराफात।

आखिर बिन्नी के पापा से भी कहाँ तब उसकी शिकायतें करती ।वो बेचारे तो सुबह नौ बजे से जाते और देर रात तक लौटते। अपने पापा के आने तक बिन्नी जागता और आते ही उनके गले में झूल जाता।उसकी प्यारी-प्यारी बातों शरारतों के सामने विनोद दिन भर की थकान भूल जाता।

"हाँ माँ आया" कहकर वह से स्टूल से कूद गया।

"क्या कर रहा था यहाँ.?" स्मृति में लगभग डांटते हुए पूछा।

"अरे!माँ धीरे-धीरे बोलो..." होठों पर उंगली रखते हुए वह बोला। गौरैया उड़ जाएंगी।"

"मतलब...?"

"पिछली बार की तरह इस बार भी गौरैया ने अपना घोंसला बनाया है,देखो वहाँ।" लॉफ्ट की तरफ इशारा करते हुए बोला।

"तो मैं उनके लिए दाना, पानी और कपड़े के टुकड़े रख रहा था।" बड़ी मासूमियत से बिन्नी ने जबाव दिया।

"हे भगवान!तंग आ गई मैं तो तुझसे,मोहल्ले की सारी गायें, कुत्ते, बिल्ली कम थे क्या, जो रोज तेरे दोस्त बने दरवाजे पर खड़े रहते हैं।और अब ये......"

"अरे माँ कुछ दिनों की तो बात है, फिर ये उड़ जाएंगी और हाँ आप क्या कह रही थी मुझसे ...?"

"तुझे बुलाने आई थी बेटा अब पढ़ने बैठ जाओ परीक्षा आने वाली है।"

"आया माँ, कहकर बिन्नी बाहर की ओर दौड़ा तो गेट के पास दो कुत्ते एक काला एक सफेद और दो गायें खड़ी थी। जैसे ही बिन्नी ने दरवाजा खोला वे उसकी ओर लपके। बिन्नी ने सभी को प्यार से सहलाया,खाने को रोटी दी और अपने दोस्तों के कान में कुछ कहा सभी ने सिर हिलाया मानों उनकी समझ में आ रहा था कि बिन्नी कह रहा है कि मैं पढ़ने जाता हूँ और थोड़ी देर बाद आऊंगा। हाथ हिलाते हुए बिन्नी ने उन्हें बाय किया और हाथ- मुँह धोकर पढ़ने बैठ गया। बिन्नी की दुनिया देखकर स्मृति मन ही मन मुस्कुरा रही थी।

नैनु का टीवी

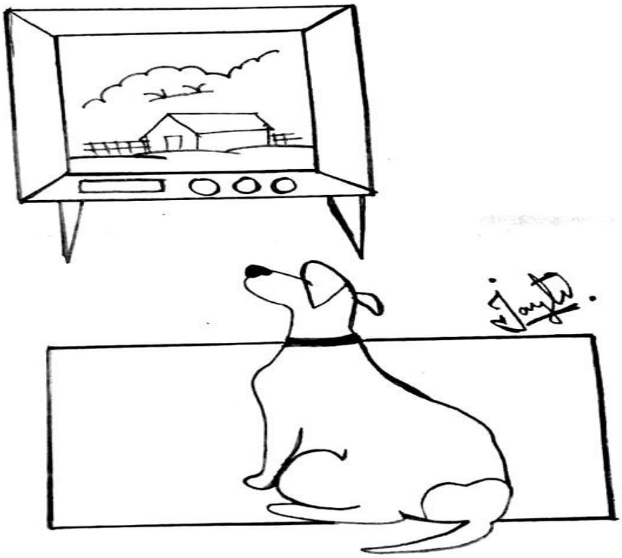

"क्या यार वही रोज यहाँ से वहाँ घूमों, हम तो थक गए हैं, चलो चल कर कहीं पेड़ की छांव में बैठते हैं, जहाँ पानी भी हो।" गोलू हाथी ने अपने दूसरे सभी साथियों से कहा।

"हाँ तुम सच कह रहे हो यार" ऊँट बोला।

"पर जाए कहाँ, सारे जंगल भी कटकर विरले से हो गए हैं।" उदास स्वर में नीलगाय ने कहा और सभी चलते चलते एक बड़े पेड़ के नीचे जा खड़े हुए ।तभी पिंटू खरगोश ने कहा यह आजकल "नैनु सियार कुछ दिनों से हमारे साथ नहीं आ रहा"

"क्या बात है, तबीयत तो ठीक है न उसकी?" गोलू हाथी ने चिंतित स्वर में कहा।

"हाँ ठीक है, मैं उससे परसों बुलाने गया था। देखा तो दीवार पर बड़ी-सी पेटी लगी है। उसमें कुछ देख रहा था। मुझसे छोटे भाई ने बाहर कह दिया कि वह घर पर नहीं है। वह तो मैंने झांक कर अंदर उसे देख लिया, मैं चुपचाप वापस आ गया।"

"हूँ, तो यह बात है चलो चल कर देखते हैं उसे, या तो वह सब को उसके बारे में बताएं या फिर हमारा साथ छोड़ दे।"

"हाँ, हाँ तुम ठीक कह रहे हो हाथी भाई।"

सब ने एक स्वर में कहा। सब मिलकर नैनु सियार के घर पहुंचे। दरवाजा खुला हुआ था। सब अंदर पहुंच गए, देखा तो वहाँ नैनु आराम से टीवी पर कार्टून देख रहा था। सबको एक को एक साथ आते देख वो चौंक गया। "अरे!तुम सब, आओ आओ।'

"तुम इतने दिनों से कहाँ थे?" हाथी ने पूछा ।

"मैं न आने ही वाला था पर...." टीवी की ओर देखते हुए बोला"

"और यह क्या है..."? खरगोश ने कूदते हुए पूछा

"अरे तुम सब नाराज मत हो भाई, मेरे पिताजी ने शहर से मंगाया है, इसे टीवी कहते हैं ।"

"टीवी" सब एक साथ बोले।

"तो तुम इसकी वजह से हमारे साथ खेलने नहीं आ रहे थे और हमें बताया भी नहीं। हम कितनी चिंता कर रहे थे तुम्हारी, बहुत गलत बात है यह दोस्तों के बीच ऐसा नहीं होना चाहिए।" हाथी दुखी स्वर में कहा।

"माफ कर दो भाई लोगों और मुझे भी कहाँ अकेले इसे देखने में मजा आ रहा था। वह तो मम्मी बोली कि बड़ा महंगा है, शहर से आया है, खराब हो जाएगा बस इसलिए...."

"ठीक-ठीक समझ गया, कोई बात नहीं अब चलो खेलने।"

"अरे नहीं, आज घर पर कोई नहीं है, तुम सब यहीं रुको, मैं सबको टीवी दिखाता हूं।" रिमोट से जैसे ही उसने टीवी चालू किया कार्टून चैनल पर ढेर सारे अपने जैसे लोग देखकर वह खुश हो गए। वे लोग बहुत खुशी-खुशी टीवी देख रहे थे और बीच-बीच में शोर भी कर रहे थे। जैसे ही कार्टून खत्म हुआ कि नैनु के मम्मी-पापा आ गए। सभी दोस्त सिर झुकाकर चुपचाप खड़े थे।

नैनु कुछ बोलता उसके पहले मम्मी बोली "हूं तो यह हो रहा था हमारी पीठ के पीछे। ."

"नहीं मां, मैंने इन्हें नहीं बुलाया।वो मैं इतने दिनों से इनके साथ खेलने नहीं जा रहा था तो इन्हें लगा कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है इसलिए यह सब मुझे मिलने चले आए।"

"अच्छा यह बात है।" मां ने हंसते हुए कहा, अच्छा हुआ तुम लोग आ गए। वैसे भी दिनभर टीवी देखना अच्छी बात नहीं है, तुम लोगों को खेलना बहुत जरूरी है। तो कल से तुम अपने साथियों के साथ खेला करो और लौटते समय सभी यहाँ आएंगे और एक घंटे टीवी देख सकते हैं।"

"वाऊ....सभी एक साथ चिल्लाए।" थैंक्यू आन्टी" और खुशी-खुशी अपने-अपने घर चले गए।

आलसी शिवानी

शिवानी बहुत आलसी लड़की थी। इस वजह से उसके सारे काम देर से होते। रोज उसकी गाड़ी दस बार हार्न बजाती तब वह तैयार होकर बाहर आ पाती, इससे जो बच्चे पहले से गाड़ी में बैठे हुए रहते उसे कई बार टोकते व हंसते भी ।पर उसे जैसे कोई फर्क नहीं पड़ता।

कक्षा में बोर्ड पर टीचर लिखाती तो सभी बच्चे लिख लेते पर उसका काम हमेशा ही अधूरा रहता।अब उसके साथी भी उसे कॉपी देने से कतराने लगे थे।

वह स्कूल के किसी भी कार्यक्रम में हिस्सा नहीं लेती। उसकी टीचर व उसकी माँ ने कई बार उसे समझाया कि खेलने- कूदने से उसका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, लेकिन अनसुना वह या तो बैठकर टीवी देखती रहती, मोबाइल

में गेम खेलती या सोती रहती। पढ़ने में अच्छी होने के बाद भी परीक्षा में अच्छे अंक नहीं आ पाते एवं सारा सामान अव्यवस्थित रहता।

वही उसकी छोटी बहन सारिका वह बहुत तेज थी। वह अपना काम समय पर कर लेती। व पढ़ाई में भी अच्छी थी।

शिवानी की माँ शिवानी को लेकर बहुत चिंतित रहती।

शिवानी की वार्षिक परीक्षा नजदीक आ रही थी, पर शिवानी की न तो कॉपियों में पूरा काम था न उसका मन पढ़ने में लगता। आखिरकार इस वर्ष कक्षा पाँचवी की परीक्षा उसे में दो विषय में सप्लीमेंट्री आ गई। वहीं दूसरी और उसकी बहन व कॉलोनी की सभी बच्चे अच्छे नंबरों से पास हुए।

सभी शाम को ग्राउंड में खेलते, कुछ लोग बाहर घूमने भी गए।पर बेचारी शिवानी किताबें लिए बैठी रोती रहती। उसे अपनी गलती का एहसास हो रहा था। एक दिन उसने माँ से कहा "माँ मुझसे गलती हो गई अब मैं क्या करूं..?"

माँ ने उसे प्यार से समझाते हुए कहा "बेटा अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है तुम इन सब से आगे निकल सकती हो बस जरूरत है अपना काम समय पर और मन लगाकर करने की, क्या तुम ऐसा कर पाओगी....?"

"हाँ माँ..." उसने दृढ़ निश्चय के साथ कहा। शिवानी को अब पछतावा हो रहा था। अब वह माँ के साथ सुबह जल्दी उठती, घूमने जाती घर के काम में हाथ बटाती और फिर पढ़ाई भी करती।अब वह अच्छे अंक लेकर पास हो गई और आलस्य को त्यागकर ग्राउंड में सब के साथ खेलने भी जाती। अब सभी शिवानी से बहुत खुश थे।

पत्र की दुनिया

"माँ माँ जल्दीआओ देखो मैं क्या लाया हूँ..?" सुमित स्कूल से आते ही माँ को आवाज देते हुए बोला।

"क्या हुआ बेटा, और ये क्या है...?" सुमित के हाथ में बहुत सुंदर लिफाफा देखकर रजनी ने पूछा।

"माँ देखो यह लिफाफा है, इसमें चिट्ठी रखते हैं।"

"अरे वाह! यह तो बड़ा सुंदर है किसने बनाया?"

"मैनें, पता है आज मेरी मेडम ने हम सभी बच्चों को एक-एक पत्र लिखने के लिए कहा। और बोला कि तुम जिसे सबसे ज्यादा पसंद करते हो उसे पत्र लिखो तो,मैंने आपको पत्र लिख दिया।"

"देखूँ तो क्या लिखा है।"

"अरे वाह! यह तो बड़ा अच्छा लिखा है।" रजनी पत्र को उलट पलट के देखते हुए बोली।

"माँ मेडम बता रही थी कि पहले मोबाइल नहीं होता था तो हम पत्र लिखते थे, क्या यह सच है?"

"हाँ बेटा मोबाइल तो अभी कुछ दस-पन्द्रह सालों से आया है।इसके पहले जब हमें एक दूसरे को संदेश भेजना होता था या कुछ बात करनी होती थी तो हम पत्रों के माध्यम से ही करते थे।"

"तो माँ आपको जिससे बात करनी है उस तक पत्र कैसे पहुंचता था?"

"बेटा हम हमें जिसको पत्र लिखते हैं उस पर उसका पता लिखकर डाकटिकट लगा कर देते थे पोस्ट कर देते थे।"

"माँ क्या हम सिर्फ लिफाफे में ही लिखकर पत्र भेज सकते थे?"

"नहीं बेटा, पोस्टकार्ड अंतर्देशीयपत्र और लिफाफा आदि के माध्यम से पत्र जाते थे, बस प्रक्रिया वही रहती थी।"

"हूँ...... सुमित कुछ सोचता हुआ बोला।"

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ. वर्षा चौबे
जन्म - 04 अप्रैल, नरसिंहपुर
माता - श्रीमती अन्नपूर्णा मिश्रा
पिता - श्री ब्रजमोहन मिश्रा
पति - श्री राहुल चौबे
शिक्षा - एम.ए.(हिन्दी अर्थशास्त्र) बी.एड., एम.एड. एवं पी.एच.डी. (छायावाद में बिम्ब योजना)
निवास स्थान - गौतम नगर, भोपाल, म.प्र. 462023
मो. नं. - 9827318628
मेल आई.डी. - varshachoubey04@gmail.com
संप्रति - शिक्षिका
विद्या - कविता, लघुकथा, कहानी, गीत, बाल साहित्य
प्रकाशन - बाल साहित्य की किताब 'बाल-वैभव', लघुकथा संग्रह 'शिखर की ओर' जे.एम.डी. पब्लिकेशन दिल्ली की दो किताबों में संपादन में सहयोग एवं आकाशवाणी और दूरदर्शन पर कविता पाथ व आलेख वाचन।
सम्मान/पुरस्कार
1. नवोदित लेखिका सम्मान 2013 , म.प्र. लेखिका संघ द्वारा।
2. श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान वर्ष 2005।
3. गुलाबराय स्मृति शिक्षक सम्मान 2015।
4. श्रीमति रक्षा सिसोदिया शिक्षक सम्मान 2016, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति भोपाल द्वारा
5. नारी शक्ति सम्मान 2014, जे.एम.डी. पब्लिकेशन दिल्ली द्वारा।
6. साहित्य सेवा सम्मान 2016,सामाजिक व साहित्यिक सेवा हेतु कादंबिनी संस्था द्वारा
7. ज्ञान गंगा शिक्षक सम्मान 2017, विपिन जोशी स्मारक समिति द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु।
8. शब्द शक्ति सम्मान 2017, अन्तरा शब्द शक्ति समूह द्वारा।
9. भाषा सारथी सम्मान 2017, मातृभाषा.कॉम द्वारा।
10. पवैया पांडूलिपि पुरस्कार वर्ष 2018 'मुठ्ठी भर धुप' (पाण्डुलिपि को)
11. श्रीमति सुशीला जिनेश स्मृति पुरस्कार 2019 एवं साहित्य अलंकरण सम्मान अ.भा. हिन्दी सेवा समिति द्वारा 'शिखर की ओर' को।
12. उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान 2019, विभागीय अनुमोदन, नगर निगम भोपाल द्वारा

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-88102-79-7
मूल्य- 60/-